P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-8* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

21वीं शताब्दी में भारत चीन सामरिक संबंध

विनिता कुमारी अग्रवाल
शोध छात्रा,
राजनीति शास्त्र विभाग,
जय नारायण विश्वविद्यालय,
जोधपुर

सारांश

भारत का सामरिक वातावरण उथल–पुथल से भरपूर है। लगभग एक दशक के दौरान चीन का उदय एशिया की निरन्तर वृद्धि में सहायक रहा है। लेकिन साथ ही उसने सुरक्षा व्यवस्था पर अभूतपूर्व दबाब भी बनाया है। दरअसल चूंकि चीन का लक्ष्य चीन उन्मुख एशिया को गढ़ना है, इसलिए वह यह संकेत दे रहा है कि उसका वास्तविक भू राजनीतिक विवाद दूर स्थित अमेरिका के मुकाबले भारत के साथ ज्यादा है। भारत के इर्द–गिर्द के देश भारत की घेराबंदी करने की चीनी बिसात के मोहरे बन गए है। 1962 के सैन्य सैनिक हमले और फिर नक्शे में गड़बड़ी के बाद से चीन भारत को कई दिशाओं में सामरिक दृष्टि से घेरने की दिशा में बढ़ रहा है।

मुख्य शब्द : सामरिक, हिन्दमहासागर, रणनीति, सुरक्षा व्यवस्था, चीन उन्मुख, एशिया।

प्रस्तावना

21वीं सदी में भारत व चीन एशिया की तेजी से बढती हुई दो अर्थव्यवस्थाएँ हैं। सम्पूर्ण विश्व बढ़ती हुई आर्थिक मंदी से उबरने का रास्ता इन दोनों देशों में ही ढूँढ रहे हैं। वर्तमान में भारत व चीन के आर्थिक संबंध पहले के मुकाबले काफी बेहतर है। आपसी आत्मनिर्भरता तेजी से बढ़ रही है, भले ही व्यापार का संतुलन चीन के पक्ष में तिरछा है। दोनों देश डब्ल्यूटीओ वार्ता और जलवायु परिवर्तन पर बातचीत जैसे मुद्दों पर सहयोग कर रहे है।

सामरिक स्तर की बात करे तो, चीन हमशेा स्पष्ट रूप से मुखर राजनीतिक, राजनयिक और सैन्य रवैये का प्रदर्शन करता रहा है। [1]

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत प्रपत्र में भारत चीन सामरिक संबंधों पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया है। 21वी. शताब्दी में भारत चीन सामरिक संबंधों के अन्तर्गत बदलते हुए परिदृश्य में भारत व चीन की रणनीति क्या है ? चीन द्वारा हिन्द महासागर में भारत को घेरने की नीति, भारतीय सीमाओं पर इफ्रास्ट्रक्चर निर्माण कार्य शुरू करना, चीन द्वारा जल, थल से भारत की घेराबंदी करके भारत को कमजोर करना इत्यादि चीनी रणनीति का अध्ययन इस प्रपत्र में किया जायेगा।

भारत–चीन के संबंध के संदर्भ में कौटिल्य ने कहा था ''अपने निकट पड़ोसी को प्रतिद्वन्दी या दुश्मन माना जाना चाहिए।'' वास्तविकता यह है। कि अन्तर्राष्ट्रीय प्रवाली निर्मम है और चल रही सामरिक प्रतिस्पर्धा आसानी से संघर्ष में बदल सकती है। [2]

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में कुछेक अपवाद को छोड़कर राज्यों के बीच सीमा विवाद एक उभयनिष्ठ कारक रहा है। अपनी स्वतंत्रता के प्रारंभ से ही चीन ने विस्तारवादी नीति का अनुसरण किया है। भारत और चीन के मध्य स्थित स्वतंत्र तिब्बत राज्य पर सन् 1951 में एकतरफा कार्यवाही कर चीन ने उस पर कब्जा कर लिया जिससे चीन की स्थलीय सीमा भारत से सट गई और यहीं से भारत चीन के बीच सीमा विवादों का जन्म हुआ।

भारत व चीन के मध्य (पूर्वी, पश्चिमी व मध्य क्षेत्र में) सीमा 4050 किमी लंबी है। जिससे पूर्वी क्षेत्र में अरूणाचल प्रदेश, मध्य क्षेत्र में उत्तराखंड हिमाचल प्रदेश एवं उत्तर पश्चिम के लद्दाख, कश्मीर इसकी सीमा से लगे हुए है। पूर्वी क्षेत्र में 1100 किमी, लंबी मैकमोहन रेखा कहलाती है जो कि तिब्बत को अरूणाचल प्रदेश से अलग करती है। इसके अन्तर्गत 5000 वर्ग किमी. का क्षेत्र विवादग्रस्त है। पश्चिमी सीमा में 600 किमी. की लंबी जम्मू कश्मीर, सीमा रेखा सिक्यांग को तिब्बत से अलग करती है। इस क्षेत्र में 25000 वर्ग किमी. क्षेत्र विवादित है। इस क्षेत्र में पाकिस्तान ने पाक अधिकृत कश्मीर का 5180 वर्ग किमी. क्षेत्र गैर कानूनी रूप से चीन को दे रखा है। मध्य क्षेत्र में 650 किमी. सीमा चीन से लगती है।

चीनी सामरिक घेराबंदी

चीन सामरिक दृष्टि से भारत को घेरना चाहता है और इस दिशा में चीन ने अनेक कदम भी उठाये है।

स्थल सीमा में चीनी घेराबंदी

चीन भारत को घेरने हेतु सीमाओं पर इंफ्रास्ट्रक्चर निर्माण कार्य शुरू कर रहा है ताकि वह भारत पर दबाव बना सके। चीन तिब्बत के सुरक्षात्मक महत्व को देखते हुए। वहाँ से अपनी गतिविधियाँ का संचालन करता रहा है। विकास के नाम पर तिब्बत में रेलवे लाइन, हवाई अड्डे, हवाई पट्टी एवं सड़कों का जाल फैलाकर इस स्थिति में आ गया है कि भारत पर संभाव्य हमले के लिए चीन कोई भी समय चुनकर सेना व रसद के साथ हमारी सीमा के निकट पहुँच सकता है। चीन वास्तविक नियंत्रण रेखा और भारतीय सीमा तक चार हाइवे बना चुका है।[4]

चीन व पाकिस्तान के मध्य निरन्तर सुद्वढ़ हो रहे नाभिकीय व सामरिक संबंध 21वीं शताब्दी में भारतीय सुरक्षा के लिए संवेदनशील मुद्दा है। पाक–आधिकृत कश्मीर में चीन की बढ़ रही सामरिक गतिविधियाँ भारतीय सुरक्षा के लिए कदाचित शुभ नहीं है। पाक अधिकृत कश्मीर में गिलिगत व ब्लूचिस्तान क्षेत्र में पाकिस्तान द्वारा चीन को वास्तविक नियंत्रण सौपने की जो कूटनीतिक चाल चली जा रही है। उसके गंभीर सामरिक व कूटनीतिक निहितार्थ है। [5]

समुद्री सीमा से चीनी घेराबंदी

हिन्द महासागर पर अपना प्रभुत्व बढ़ाने हेतु चीन के द्वारा भारत के चारो तरफ एक चक्रव्यूह बना लिया है, जो भारतीय सुरक्षा के लिए गंभीर चुनौती है। चीन–हिन्द महासागर तक अपनी पहुँच बढ़ाने हेतु पाकिस्तान के ग्वादर बंदरगाह को आधुनिक तकनीकी के द्वारा स्पोर्ट के रूप में विकसित कर रहा है। चीन ने हिन्द महासागर क्षेत्र में दखल बढ़ाने के उद्देश्य से चीन ने श्रीलंका के हब्बनटोटा को सी हार्बर के रूप में विकसित करने के लिए श्रीलंका से 2007 में समझौता किया है। चीन हिन्द महासागर में अपना प्रभुत्व बढ़ाने हेतु अपनी नौसेना में लगातार वृद्धि करता आ रहा है, साथ ही भारतीय उपमहाद्वीप से सटे हुए राष्ट्रों को लगातार चीन अपने नियंत्रण में ले रहा है। अतः चीन ने पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, नेपाल और मालद्वीप तथा म्यांमार में अपने अड्डे बनाकर भारत की सुरक्षा के लिए खतरा उत्पन्न कर रहा है। [6]

इसके अलावा चीन दक्षिणी चीन सागर में निरन्तर सैन्य गतिविधियों और ठिकानों का विस्तार कर रहा है। स्पैरटली द्वीप में रनवे की तैयारी जो कि दक्षिणी चीन सागर में जंगी जहाजों को रिफ्यूज करने की क्षमता प्रदान करेगा। चीन पूर्वी चीन सागर में अपनी मजबूती और नौसैनिक ताकत को मजबूत करने के भी कदम उठा रहा है। [7]

आर्थिक क्षेत्र में चीनी घेराबंदी

भारत व चीन के बीच व्यापार संबंधित भारी असन्तुलन है। दोनों देशों के बीच जहाँ हम 12 अरब का माल ही भेजते है तथा चीन से हम 60 अरब का माल मंगवाते है। इस प्रकार से 48 अरब का असन्तुलन भारत के लिए घाटे का सौदा है। चीन के द्वारा अपने व्यापार के बढ़ाने के लिए नैतिक व अनैतिक कार्य किये जा रहे है। चीन अपने घटिया उत्पादों को सस्ते दामों में भारतीय बाजार में ढूंसने का प्रयत्न कर रहे हैं। [8]

हाल ही में चीन द्वारा 'वन बेल्ट वन रोड़ ' परियोजना जारी की गई हैं चीन अपनी इस महत्वाकांक्षी परियोजना के जरिये दुनिया की 60 फीसदी आबादी यानी 4.4 अरब लोगों पर शिंकजा कसने की कोशिश कर रहा है। वह इन पर एकछत्र राज करना चाहता है, वह इनको रोजगार देने का लालच दे रहा है।

'वन बेल्ट वन रोड़' प्रोजेक्ट चीन के प्रसिद्ध सिल्क रोड इकोनॉमिक बेल्ट (SREB) और 21वी. सदी के समुद्री सिल्क रोड़ (MSR) का एकीकृत स्वरूप है। ओबीओआर को चीन के प्राचीन स्थलीय व समुद्री व्यापार मार्गो के दायरे में आने वाले देशों के बीच क्नेक्टिविटी और सहयोग बढ़ाने की चीन की पहल के रूप में समझा जा सकता है।[9]

'ओबोर' अपनाने के पीछे चीन का उद्देश्य युद्ध के बाद दोबारा खडे हुए यूरोप के मार्शल प्लान के चीनी संस्करण को दुनिया मात्र में फैलाना नहीं है अपितु इसके जरिये वह एशिया, अफ्रीका और यूरोप में व्यापार वाणिज्य बढ़ाने की जमीन तलाश कर रहा है। ओबोर के जरिये चीन का उद्देश्य पश्चिमी देशों की आँख की किरकिरी बन चुके व आर्थिक बदहाली से जूझ रहे पाकिस्तान को आर्थिक व सैन्य मोर्चे पर भारत के समकक्ष ला खड़ा करना है। दक्षिण एशियाई देशों के बीच भारत के दबदबे को कम करने के लिए ये प्रोजेक्ट चीन के लिए काफी खास है। [10]

भारत व चीन के सामरिक संबंधों में चुनौतियाँ

शस्त्रों की टोड़ के संबंध में चुनौतियाँ

चीन विश्व की महाशक्ति बनने की ओर तीव्र गति से अग्रसर है। चीन द्वारा लंबे समय के लिए बनाई गई रणनीति इस बात की घोतक है कि वह एशिया महाद्वीप में कम समय में लंबे समय के लिए आर्थिक व सैन्य शक्ति के रूप में वैश्विक शक्ति के रूप में अपनी पहचान बनाए। इसके लिए उसने सैन्य आधुनिकीकरण की तरफ अपना ध्यान केन्द्रित किया।

21वीं सदी में चीन का सफलतापूर्वक प्रगति करना विश्व को आश्चर्यचकित करना ही नहीं बल्कि एक चुनौती बन गया है। चीन के द्वारा अपनी परिष्कृत मिसाइलों तथा जखीरों को छुपाने के लिए गुप्त सुरंगों का जाल बनाया गया है।

रक्षा व्यय के संबंध में चुनौती

चीन की समस्त सैन्य क्षमताओ को आगे बढ़ाना कम्युनिष्ट पार्टी का उद्देश्य है यह कार्य माओ से लेकर देंग के शासनकाल और वर्तमान समय तक सतत् रूप से जारी है। [11]

2018 में चीन का रक्षा बजट 175 अरब अमेरिकी डॉलर यानी 11,380 अरब रूपये हो गया है। यह भारत के बजट की तुलना में करीब तीन गुना है। भारत का बजट चीन के मुकाबले सिर्फ 45 अरब डॉलर यानी करीब 2.95 लाख करोड़ ही है। [12]

निष्कर्ष

भारत चीन सामरिक संबंध ताश के एक खेल की तरह है दोनों अपनी रणनीति बनाते समय भावनाओं को महत्व नहीं देते हैं।, अपने रूख पर कायम रहते हैं और जीत के लिए प्रयास करते हैं।

भारत और चीन दोनों ही ऐसा कर रहे है और दोनों एक दूसरे को परोक्ष रूप से संदेश दे रहे है कि मेरे मामलों में हस्तक्षेप मत करो।

निःसन्देह चीन की भारत को घेरने की रणनीति का जवाब भारत चीन के पडौसी देशों के साथ मैत्री संबंध स्थापित कर दे रहा है और इसके लिए वह चीन के पडौसी देशों के साथ गठबंधन कर रहा है। भारत अपनी पूर्व की ओर देखो नीति के तहत म्यांनमार, श्रीलंका, वियतनाम इत्यादि के साथ संबंध मजबूत कर रहा है।

यूं तो भारत भी अपनी सेना का आधुनिकीकरण करने में जुटा है। लेकिन तीन क्षेत्रों मिसाइल, अंतरिक्ष और परमाणु क्षेत्र में चीन भारत से मीलों आगे है। हमें अपनी क्षमताओं का भारी विकास करना होगा।

भारत को चीन के संबंध में बहुमुखी समग्र रणनीति बनानी होगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *India-china Relations: Strategic stability & Tactical Aggressiveness, IIT Madras, china studies centre, Article 11, 24 January, 2012*
2. *कुमार, अरविन्द कुमार, प्रणव '' इण्डिया चायना रिलेशन्स : प्रोस्पेक्ट्स फॉर बिल्ड़िग सिनर्जी इन द ट्वेन्टी फर्स्ट सेंचुरी '' मणिपुर सेंटर फॉर एशियन स्ट्डीज, मणिपुर, 2012*
3. *कुशरे, डॉ. लखन सिंह '' भारत–चीन सीमा विवाद : एक विहंगावलोकन' शब्द–ब्रह्म अन्तर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका, वॉल्यूम 1, 17 जून, 2013*
4. *बघेल, डॉ. वीरेन्द्र सिंह '' भारत चीन युद्ध : अर्थशती मूल्यांकन ओरिएंट क्राफ्ट पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2014 पृ.सं. 225*
5. *माधव, राम ''असहज पड़ौसी : युद्ध के 50 वर्षो बाद भारत और चीन '' प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2015 पृ. सं. 179*
6. *ढाका, डॉ. धर्मवीर '' भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा में चीन एक चुनौतीपूर्ण बाधा '' पृ.सं. 3*
7. *अहमद, डॉ. सलीम ''पश्चिमी एशिया में ऊर्जा सुरक्षा उभरते भारत में जरूरत, वर्ल्डफोकस, जुलाई, 2015 पृ.सं. 83*
8. *बघेल, डॉ. वीरेन्द्र सिंह '' भारत को घेरता चीन '' आत्माराम एण्ड संस, नई दिल्ली, 2017 पृ.सं. 45–46*
9. *प्रोफेसर जोशी, निर्मला और कुमारी कमला ''चीन की सिल्क रोड़ आर्थिक बेल्ट और मध्य एशियाई प्रतिक्रिया'' वर्ल्ड फोकस, फरवरी 2017, पृ.सं. 5–8*
10. *कौशिक, अतुल '' ओबेर बिना भी चलेगा विकास क्रम '' राज. पत्रिका, 30 अक्टूबर 2017, पृ.सं. 4*
11. *सिंह, आर. पी. '' भारम चीन सैन्य शाक्ति ''आत्माराम एण्ड संस पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2016 पृ.सं. 195–196*
12. *इकॉनोमिक टाइम्स, 6 मार्च, 2018*